

गहरी नदिया है नाव तेरी कागज की ॥२॥

कागज की रे. के - गज की

गहरी.....

* धन दौलत जा साथ न जेहे

बारि उमरिया - दो दिन की.... गहरी---

* राज पाट जे महल अटारी

रह गये आखिर - देखत की... गहरी---

* भाई - बन्धु और कुटुम - कबीला

साथ चलत हैं - कहु गज ही.... गहरी---

* प्राण राम जब निकस गये हैं

मिलहे जगह लोहे - दो गज की... गहरी---

* जीभ मिली लोहे - मीठो बोलो

बात करत काहे - दस गज की.... गहरी---

* केहत "श्री बाबा श्री" सुनो सब साथी

करनी सुधारो - ये तन की....

गहरी नदिया.....